नाभिकीय ईंधन सम्मिश्र (एनएफसी), हैदराबाद में सातवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन

परमाणु ऊर्जा विभाग के सातवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन विगत 05-06 नवंबर 2004 को हैदराबाद स्थित इकाई नाभिकीय ईंधन सम्मिश्र में किया गया ।

दिनांक 05 नवंबर 2004 को एनएफसी के सारथी भवन के ऑडिटोरियम में इस द्वि-दिवसीय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ । प्रात: 10.00 बजे परमाणु ऊर्जा विभाग की विगत 50 वर्षों की उपलब्धियों पर जनजागरूकता प्रभाग, पऊवि द्वारा तैयार एक फिल्म का प्रदर्शन किया गया । समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. अनिल काकोडकर, अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग एवं सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग ने दीप प्रज्वलित कर समारोह का विधिवत उद्घाटन किया । इस अवसर पर समारोह के विशिष्ट अतिथि के रूप में हैदराबाद के दैनिक समाचार पत्र "स्वतंत्र वार्ता" के संपादक डॉ. राधेश्याम शुक्ल उपस्थित थे । समारोह की अध्यक्षता एनएफसी के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक श्री आर कालिदास ने की । श्री व्ही. पी. राजा, संयुक्त सचिव एवं अध्यक्ष, संयुक्त राभाकास, पऊवि, श्री श्रीकांत चौधरी, महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष, राभाकास, एनएफसी भी मंच पर उपस्थित थे । समारोह में विभाग की विभिन्न यूनिटों, उपक्रमों तथा सहायता प्राप्त संस्थानों से आये प्रतिभागीगण, स्थानीय प्रेस के प्रतिनिधि तथा एनएफसी के अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे ।

पऊवि द्वारा तैयार पुस्तिका "विकिरण, स्वास्थ्य और समाज का मुख्य अतिथि द्वारा विमोचन। बायें से श्री व्ही. पी. राजा, संयुक्त सचिव, पऊवि, श्री आर. कालीदास, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक, एनएफसी, डॉ. अनिल काकोडकर, सचिव, पऊवि, डॉ. राधेश्याम शुक्ल, संपादक "स्वतंत्र वार्ता", हैदराबाद तथा श्री श्रीकांत चौधरी, महाप्रबंधक, एनएफसी ।

सम्मेलन के उद्घाटन सत्र के दौरान मुख्य अतिथि डॉ. अनिल काकोडकर, सचिव, पऊवि का संबोधन बैठे हुए (बायें से) श्री व्ही. पी. राजा, संयुक्त सचिव, पऊवि, श्री आर. कालीदास, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक, एनएफसी, डॉ. राधेश्याम शुक्ल संपादक, "स्वतंत्र वार्ता" तथा श्री श्रीकांत चौधरी, महाप्रबंधक, एनएफसी ।

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, एनएफसी, हैदराबाद की छात्राओं द्वारा सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत के उपरांत एनएफसी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री श्रीकांत चौधरी ने आमंत्रित गणमान्य अतिथियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया ।

श्री आर. कालिदास, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक, एनएफसी ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में पुन: सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत करते हुए नाभिकीय ईंधन सम्मिश्र को राजभाषा सम्मेलन की मेजबानी का अवसर प्रदान करने के लिए परमाणु ऊर्जा विभाग के प्रति आभार प्रकट किया ।

परमाणु ऊर्जा विभाग के संयुक्त सचिव (उद्योग एवं खनिज) एवं परमाणु ऊर्जा विभाग की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री व्ही. पी. राजा ने विभाग में राजभाषा कार्यान्वयन की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए अपने संबोधन में कहा कि अपने अन्य कार्यकलापों की भांति ही परमाणु ऊर्जा विभाग को राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी अपेक्षित उत्कृष्टता का प्रदर्शन करना

वर्ष 2003-04 के लिए राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार

राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट रचनात्मक योगदान के लिए
श्री सर्वेश चंद्र कटियार, केन्द्र निदेशक, तारापुर परमाणु बिजलीघर का सम्मान । डॉ. अनिल काकोडकर, सचिव, पऊवि, श्री कटियार को प्रशस्ति -पत्र प्रदान करते हुए ।

पऊवि की यूनिटों में वर्ष 2003-04 के दौरान राजभाषा नीति का कार्यान्वयन। सर्वोत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु एएमडी के लिए मुख्य अतिथि डॉ. अनिल काकोडकर, सचिव, पऊवि से राजभाषा शील्ड ग्रहण करते हुए श्री आर. एम. सिन्हा, निदेशक, एएमडी।

पऊवि के उपक्रमों में वर्ष 2003-04 के दौरान राजभाषा नीति का कार्यान्वयन। सर्वोत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु आईआरईएल के लिए मुख्य अतिथि डॉ. अनिल काकोडकर, सचिव, पऊवि से राजभाषा शील्ड ग्रहण करते हुए श्री पी. एम. प्रशांत कुमार, प्रधान (मासंप्र), आईआरईएल ।

पऊवि के सहायता प्राप्त संस्थानों में वर्ष 2003-04 के दौरान राजभाषा नीति का कार्यान्वयन। सर्वोत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु एचआरआई के लिए मुख्य अतिथि डॉ. अनिल काकोडकर, सचिव, पऊवि से राजभाषा शील्ड ग्रहण करते हुए श्री संजीव कशालकर, रजिस्ट्रार, एचआरआई।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर पऊवि द्वारा तैयार की गई पुस्तकें

होगा । उन्होंने कहा कि विभाग के कर्मचारियों को विभाग की गतिविधियों एवं इससे जुड़े अन्य विषयों के बारे में जागरूक बनाने की आवश्यकता है और इस कार्य में राजभाषा हिंदी की प्रभावी भूमिका है ।

अपने उद्घाटन संबोधन में डॉ. अनिल काकोडकर, सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग ने भाषा की शक्ति पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि दुनिया में अधिकांश समस्यायें भाषा संप्रेषण में निहित अंतराल के कारण होती है । भाषा, संप्रेषण का सशक्त माध्यम है । इसमें निपुणता हासिल करके ही हम परस्पर सामंजस्य बनाये रख सकते हैं । हमारे विभाग में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाना चाहिए । वैज्ञानिक लेखन हिंदी में होना चाहिए । हमारे वैज्ञानिक अनुसंधानों की सफलता तभी है जब हम इसका लाभ देश के अंतिम सोपान पर खडे व्यक्ति तक पहुँचाएं । वैज्ञानिक शोधों को जन-जन तक पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम हिंदी है । यदि हम विज्ञान को एक जन आंदोलन बनाना चाहते हैं तो हमें हिंदी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की सामर्थ्य को पहचानते हुए उनका उपयोग बढ़ाना होगा ।

सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित हैदराबाद के दैनिक समाचार पत्र "स्वतंत्र वार्ता" के संपादक डॉ. राधेश्याम शुक्ल ने भारतीय भाषाओं की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर विशेष रूप से बल देते हुए कहा कि हम केवल भारतीय भाषाओं के माध्यम से ही विश्व में अपनी पहचान बना सकते हैं । अंग्रेजी की सहायता से हम भारत की संस्कृति को कभी नहीं समझ पायेंगे । यदि अपनी सांस्कृतिक जड़ों को जोड़ने वाली भाषा को छोड़कर हम किसी अन्य भाषा को महत्व देंगे तो हम बिना जड़ के पेड़ बनेंगे ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. अनिल काकोडकर ने एनएफसी द्वारा तैयार की गई स्मारिका एवं संरक्षा संबंधी एक अन्य पुस्तक का विमोचन किया । इसके अलावा उन्होंने तथा आमंत्रित विशिष्ट अतिथि डा. राधेश्याम शुक्ल ने परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा तैयार की गई चार पुस्तिकाओं **'विकिरण, स्वास्थ्य और समाज'**; **'परमाणु ऊर्जा और विकिरण के संबंध में जनधारणाएं-भ्रांतियाँ एवं वास्तविकता'**; **'परमाणु ऊर्जा विभाग में संसदीय कार्य निपटान की प्रकिया'**; और **'केंद्रीयकृत प्रशासनिक संवर्ग के अधिकारियों की सिविल सूची'** का विमोचन किया ।

मुख्य अतिथि डॉ. अनिल काकोडकर, सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा वर्ष 2003-04 के दौरान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट योगदान के लिए विभाग द्वारा यूनिटों के लिए संस्थापित राजभाषा शील्ड परमाणु खनिज अनुसंधान एवं अन्वेषण निदेशालय, हैदराबाद को; उपक्रमों के लिए संस्थापित राजभाषा शील्ड इंडियन रेअर अर्थ्स लिमिटेड, मुंबई को तथा सहायता प्राप्त संस्थानों के लिए संस्थापित राजभाषा शील्ड हरीश-चंद्र अनुसंधान संस्थान, इलाहाबाद को प्रदान की गई ।

परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा विभाग तथा इसकी स्थापनाओं में राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राजभाषा भूषण पुरस्कारों (दो) की स्थापना की गई है । ये पुरस्कार प्राप्त नामांकन तथा विभाग में मूल्याँकन के आधार पर प्रति वर्ष संगठन में कार्यरत उन दो कर्मचारियों को दिए जाते हैं जिन्होंने अपने सेवाकाल के दौरान व्यक्तिगत स्तर पर राजभाषा हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन तथा प्रचार-प्रसार के लिए प्रशंसनीय योगदान दिया हो । डॉ. अनिल काकोडकर, सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा करतल ध्वनि के बीच यह पुरस्कार विभाग के दो वरिष्ठ वैज्ञानिकों श्री सर्वेश चंद्र कटियार, स्टेशन निदेशक, तारापुर परमाणु बिजलीघर, तारापुर तथा श्री रमेश चंद्र पंत, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, मुंबई (सेवा निवृत्त) को प्रदान किया गया । श्री पंत की अनुपस्थिति में यह पुरस्कार डॉ. जी. डी. पुंगले, नियंत्रक, बीएआरसी द्वारा ग्रहण किया गया।

उद्घाटन सत्र के पश्चात परमाणु ऊर्जा विभाग की हैदराबाद स्थित तीनों इकाईयों यथा एनएफसी, एएमडी और ईसीआईएल द्वारा अपने-अपने कार्यक्षेत्रों से संबंधित दृश्य-श्रव्य प्रजेंटेशन प्रस्तुत किए गए ।

दिनांक 05 नवंबर 2004 को अपराह्न में आयोजित खुले सत्र एवं संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में विभाग की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री व्ही. पी. राजा की अध्यक्षता में विभाग तथा इसकी स्थापनाओं में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित विषयों पर व्यापक चर्चा की गई तथा अनेक निर्णय लिए गए ।

सम्मेलन में पधारे प्रतिभागियों के मनोरंजन के लिए दिनांक 05 नवंबर 2004 को शामे-ग़ज़ल कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसे काफ़ी सराहा गया ।

दिनांक 06 नवंबर 2004 को प्रात:कालीन सत्रों में उस्मानिया विश्वविद्यालय के प्रो. एम. वेंकटेश्वर ने हिंदी भाषा की विभिन्न आधुनिक प्रयुक्तियों की चर्चा की । हैदराबाद के सुप्रसिद्ध कवि एवं लेखक श्री नेहपाल सिंह वर्मा ने हैदराबादी संस्कृति का परिचय देते हुए हिंदी भाषा के परिवर्तनशील स्वरूप का विवेचन किया और विशेष रूप से दक्खिनी हिंदी की प्राचीन परंपरा का परिचय दिया ।

विभाग तथा इसकी यूनिटों में पदस्थ हिन्दी पदाधिकारियों को राजभाषा कार्यान्वयन से इतर विषयों का भी ज्ञान होने की उपयोगिता का ध्यान रखते हुए विभाग के संयुक्त सचिव तथा राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री व्ही. पी. राजा के मार्गदर्शन में **"विकिरण, स्वास्थ्य और समाज"** विषय पर भी प्रतिभागियों के लिए एक व्याख्यान रखा गया । इसमें विकिरण से संबंधित विविध क्रियाकलापों की जानकारी दी गई । इसका संचालन श्रीमती इंदिरा पशुपति, उप लेखा नियंत्रक, एक्ट्रेक तथा श्री जी. वेंकटेशन, सहायक, पऊवि द्वारा किया गया ।

अपराह्न सत्र में एनएफसी का भ्रमण कार्यक्रम रखा गया । जिसमें एनएफसी के अधिकारियों के मार्गदर्शन में प्रतिभागियों को एनएफसी की विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराया गया ।

सम्मेलन की कार्रवाई को स्थानीय प्रेस में व्यापक कवरेज मिला । सम्मेलन अपने अभीष्ट की प्राप्ति में सफल रहा ।

पृष्ठ 4 से

भी मदद मिली है. हमें यह जानकर बहुत खुशी हुई है कि वर्ष 2004 से इंप्रो को नियमित बजट के जरिए एक व्यावसायिक और एक सामान्य सेवा पद द्वारा आंशिक रूप से वित्त-पोषित किया जाता है. तथापि, अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा अभिकरण के अध्यादेश को पूरा करने में इसकी दीर्घकालीन प्रभावी भूमिका के मद्दे नजर, इंप्रो को अपने महत्वपूर्ण कार्यक्रम को कायम रखने और तेजी से आगे बढ़ाने के लिए नियमित बजट से अधिक वित्तीय सहायता की आवश्यकता है.

हालांकि, हमने घरेलू मूल साधनों का उपयोग करते हुए थोरियम का उपयोग करने संबंधी प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है, किंतु अब इसे अधिकाधिक मान्यता दी जा रही है कि थोरियम ईंधन चक्रों में इंप्रो के उद्देश्यों को पूरा करने की कुछ महत्वपूर्ण संभाव्यताएं मौजूद हैं.

यहाँ पर मैं उस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का भी ज़िक्र करना चाहूँगा जिसका आयोजन परमाणु शक्ति द्वारा बिजली का उत्पादन करने के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में ओबनिन्सिक में अभिकरण ने किया था और मेज़बानी रूसी परिसंघ ने की थी. उस ऐतिहासिक अवसर ने मुझे उन वैज्ञानिकों की योग्यता की याद दिलाई थी जिन्होंने नवीकृत प्रौद्योगिकियों की चुनौती को स्वीकार किया. उस अवसर ने हमें यह भी संदेश दिया कि आज जिन चुनौतियों का हम सामना कर रहे हैं उनके लिए हमें नवीकृत तकनीकी दृष्टिकोण अपनाने की भी आवश्यकता पड़ेगी.

इस अभिकरण ने परमाणु ज्ञान के प्रबन्धन जिसमें ज्ञान का परिरक्षण, ज्ञान का प्रचार-प्रसार, शिक्षा का सुदृढ़ीकरण और नेटवर्क के जरिए वैज्ञानिकों की क्षमता बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना भी शामिल है, के लिए जो प्रयास किए हैं वे प्रशंसनीय हैं. परमाणु ज्ञान को बढ़ावा देने, उसका प्रचार-प्रसार करने और उसे परिरक्षित रखने तथा एशिया-क्षेत्र में परमाणु के क्षेत्र में प्रतिभाशाली और योग्य व्यक्तियों की उपलब्धता लगातार सुनिश्चित करने के लिए एशियन नेटवर्क फॉर एजुकेशन इन न्यूक्लियर टेक्नॉलाजी (एएनईएनटी) की स्थापना एक महत्वपूर्ण कदम है. भारत में परमाणु के क्षेत्र में ज्ञान के प्रबन्धन के सभी पहलू जिनमें मानव संसाधन विकास, ज्ञान का परिरक्षण और प्रौद्योगिकी का स्थानांतरण शामिल है, स्वदेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए चार दशकों से अधिक समय से एक नियमित और व्यापक कार्यक्रम रहे हैं. इस क्षेत्र में अभिकरण ने हाल ही में, समय पर जो प्रयास किए हैं उनमें इस माह के शुरु में साक्ले में ज्ञान प्रबन्धन पर आयोजित सम्मेलन शामिल हैं और इन प्रयासों को और अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता है. हमारे विशेषज्ञ इस क्षेत्र में अभिकरण के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रहे हैं.

अध्यक्ष महोदय, भारत में युवा प्रतिभा कदाचित बहुत बड़ी संख्या में उपलब्ध है. मानव संसाधन हमारी ताकत है. परमाणु विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हमारा वैज्ञानिक समुदाय लगातार चलने वाले हमारे कार्यक्रम को अतिरिक्त क्षमताओं को नियोजित करने के और नई प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के द्वारा सहयोग देने के लिए पूर्णत: सक्षम, आत्मनिर्भर है और अपने लक्ष्य-मार्ग की तस्वीर स्पष्ट है. इन सबके बावजूद भी हम अंतर्राष्ट्रीय गठबन्धनों के महत्व और मूल्य को समझते हैं. हम 'वानो' प्लेटफार्म, 'सर्न' के और ब्रूकहेवन नेशनल लेबोरेटरी में 'स्टार' के सहकार कार्यक्रमों तथा अन्य कई कार्यक्रमों में जिनमें निश्चित रूप से अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा अभिकरण के तकनीकी सहकार कार्यक्रम भी शामिल हैं में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे हैं. हमें आशा है कि नाभिकीय सुरक्षा पर अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा अभिकरण के कन्वेंशन को अनुसमर्थन देने के लिए भी भारत के संबंध में स्थितियाँ शीघ्र ही अनुकूल हो जाएंगी. वर्तमान में, नाभिकीय सुरक्षा कन्वेंशन के कथित उद्देश्यों अर्थात् :

"राष्ट्रीय उपायों और अंतर्राष्ट्रीय सहकार, जिसमें जहाँ उपयुक्त हो, सुरक्षा संबंधी तकनीकी सहकार शामिल है, को बढ़ाकर विश्वव्यापी स्तर पर अत्यधिक परमाणु सुरक्षा हासिल करने और सुनिश्चित करने" और व्यापार के लिए यहाँ तक कि यहाँ तक कि सुरक्षा संबंधी उपस्करों के मामले में भी मौजूद प्रतिबन्धित प्रकियाओं के बीच असंगतता है. भारत ने राष्ट्रीय कल्याण के लिए अपने स्वावलंबी परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम को विकसित करने के लिए एक नियमित तथा जिम्मेदार दृष्टिकोण अपनाया है और वह इसे जारी रखेगा. हमारे निर्यात नियंत्रण ढाँचे की विश्वसनीयता प्रमाणित है.

अध्यक्ष महोदय, नाभिकीय प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल करते हुए मानवता की बेहतरी के लिए अनेक विकासात्मक कार्यक्रमों को बढ़ावा देने में अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा अभिकरण की भूमिका अद्वितीय है और इसे सतत् कायम रखना तथा इसका विस्तार करना होगा. हम अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा अभिकरण के ऐसे कार्यक्रमों का सक्रिय रूप से समर्थन करते हुए उनमें भाग लेते आ रहे हैं. अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा अभिकरण की कई बैठकों, आईएईए के सदस्यों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों और वैज्ञानिक दौरों का आयोजन भारत में लगातार किया जाता रहा है. हमारे वैज्ञानिकों ने अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा अभिकरण के अनेक विशेषज्ञ कार्यक्रमों और सीआरपीज़ में भाग लिया है. यहाँ यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि तकनीकी सहकार कार्यक्रम जोकि इस अभिकरण का एक सांविधिक कार्यकलाप है, के वित्त-पोषण को हमारा प्रोत्साहन और समर्थन मिलना चाहिए. हम अपनी तरफ से तकनीकी सहकार कोष में हमेशा से समय पर और पूर्ण रूप से अपना योगदान देते आए हैं. इस वर्ष भी हम ऐसा ही करेंगे.

अध्यक्ष महोदय, इससे पहले कि मैं अपनी बात समाप्त करूँ, मै इस बात पर पुन: जोर देना चाहूँगा कि मानवता द्वारा जिन समस्याओं का सामना किया जा रहा है, उनमें सभी नहीं तो अधिकांश समस्याओं का हल प्रौद्योगिकी है. हमें इस परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए मिलकर ऐसी नीतियाँ तैयार करनी चाहिए जिनसे संरक्षा और सुरक्षा के मामले में कोई समझौता किए बिना प्रौद्योगिकी निर्बाध रूप से मिलती रहे. इस संबंध में हमारी नीतियाँ प्रतिघातक होने की बजाए सकारात्मक होनी चाहिए. हमें अभिकरण के साथ मिलकर इस समस्या के लक्षण मिटाने की बजाए इसके मूल कारण को खत्म करना होगा. हमें इस बारे में एक ऐसा दृष्टिकोण विकसित करना होगा कि उस पर अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा अभिकरण किस तरह से चलते हुए आगे बढ़ सके. यह कार्य बहुत ही समयोचित होगा क्योंकि अभिकरण की स्वर्ण जयन्ती मनाने का अवसर जल्द ही आने वाला है.

हमें सार्वभौमिक कल्याण के लिए परमाणुओं का उपयोग एक सुरक्षित विश्व में करना है. इसके लिए हम मानवता के ऋणी हैं.

धन्यवाद, अध्यक्ष महोदय,